प्रकाशक की ओर से

26 दिसंबर 2004 को भूकंप और सुनामी से हुई तबाही और जीवन की क्षति से पूरा विश्व सहम कर रह गया था। तभी यह प्रश्न उठा, ''मदद कैसे की जाए?'' आपदा से पीड़ित लोगों को राहत देने, उनके दु:ख को दूर करने और नई जिंदगी शुरू करने में उनकी मदद करने के लिए मेरीलैंड हाईस्कूल की एक सहृदय छात्रा से लेकर नागपट्टिनम के अथक प्रयत्नशील जिलाधिकारी तकतमाम भारतीय व अमेरिकी नागरिकों के मन में समान रूप से सेवा भावना पैदा हुई। इन दोनों के सेवा कार्य का विवरण हेमंत भटनागर के छायाचित्रों सहित इस बार की आमुख कथा में दिया गया है। 'सुनामी के बाद खड़ा होता जीवन' में ए. वेंकट नारायण ने बताया है कि सरकार, व्यवसायियों, गांवों, स्वयंसेवी संस्थाओं और लोगों ने मदद के लिए क्या-क्या कदम उठाए और कैसे शिक्षा, खेतीबाड़ी व प्रशिक्षण की व्यवस्था की। उन्होंने आपदा से प्रभावित लोगों की मदद तथा उनके पुनर्वास के प्रयासों की समीक्षा की है। नागपट्टिनम के जिलाधिकारी जे. राधाकृष्णन ''आपदा में टीम भावना'' को सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। ''युवा अमेरिकी स्वयंसेवक'' में 16-वर्षीय लॉरीन एलिसे प्राइस बता रही हैं कि उन्होंने कैसे अपने स्कूल में दानराशि एकत्र करने का अभियान चला कर 1,00,000 डॉलर की राशि सुनामी पीड़ितों की सहायता के लिए जमा की। वे अपने सहपाठियों के साथ व्यक्तिगत रूप से सेवा करने के लिए भारत आईं। ''आपदाओं की चेतावनी मुहैया कराता अमेरिकी केन्द्र'' में चेरिल पेलेरिन ने बताया है कि अमेरिका, भारत और अन्य देश आपदा की पूर्व चेतावनी देने के लिए किस प्रकार मिल कर काम कर रहे हैं और होनोलुलु में स्थित केन्द्र से आवश्यक सूचनाएं प्राप्त कर रहे हैं। ''हरीकेन रीटा के साए में'' की लेखिका शीतल नास्ता ने हूस्टन, टैक्सस की ओर बढ़ रहे भयंकर तूफान के साए में अपने और हजारों अन्य लोगों के रोमांचकारी अनुभव के बारे में बताया है। वे एक औसत अमेरिकी की तरह 'जो होगा देखा जाएगा' के जोश के साथ हाइवे की यात्रा शुरू करती हैं और इस नतीजे पर पहुंचती हैं कि किसी भी आपदा में मनुष्यों का आपसी विश्वास बहुत जरूरी है।

हमारे इस अंक के अन्य लेखों में से एक में नेत्रहीन अमेरिकी महिला जॉयस केन ने अपने मार्गदर्शक कुत्ते के साथ भारत के विभिन्न भागों की यात्रा के दौरान मिले भारतीयों से व्यक्तिगत परिचय और आत्मीय संबंधों के बारे में बताया है और विकलांगों के बारे में परंपरागत धारणा को बदल कर यह साबित किया है कि एक विकलांग व्यक्ति कितना कुछ कर सकता है। उन्होंने एक नई प्रवृत्ति और नए सोच को जन्म दिया और विकलांगों को स्वयं अपनी सहायता करने में समर्थ बनाने के उपायों, स्वयं कार्य करने में सक्षम तथा समाज के लिए उपयोगी बनने पर चर्चा को प्रेरित किया। इसका वर्णन लॉरिंडा कीज लोंग ने ''असंभव को संभव बनाने की धुन'' में किया है।

सूसन ग्रीनवाल्ड ने ''विकलांगों ने जीते अपने लिए मोर्चे'' लेख में विकलांग खिलाड़ियों के साहस और उपब्धियों की असाधारण कहानियां दी हैं जबकि रंजीता बिस्वास ने ''ब्लाईंड ऑपेरा'' में कलकत्ता के नेत्रहीन कलाकारों की उपलब्धियों का उल्लेख किया है। बॉलीवुड की एक फिल्म का नायक मूक व बधिर है, लेकिन महत्वपूर्ण यह नहीं है बल्कि टेरेसा थाराकान की फिल्म समीक्षा के अनुसार- महत्वपूर्ण है इकबाल का विकलांगों की परंपरागत परिभाषा को बदलना।

''करमगति अमेरिका में '' में राजीव सोनी ने अमेरिकी अप्रवासी के रूप में अपने पहले हैरानी भरे दिन का शानदार ब्यौरा दिया है और यह भी कि भरपूर आशा और जीवन में विश्वास का क्या परिणाम निकला। लिसेट पूल ने ''चिकित्सक कैलिफोर्निया का'' में भारत के एक और अप्रवासी डॉ. अनमोल एस. महल की उपलब्धियों के बारे में बताया है जो शीघ्र ही कैलिफोर्निया में 35,000 डॉक्टरों के 'कैलिफोर्निया मेडिकल एसोसिएशन' के अध्यक्ष का पद संभालने वाले हैं। कैलिफोर्निया के स्वास्थ्य रक्षा से वंचित लाखों निवासी और ऐसे अल्पसंख्यक उनकी प्राथमिकता में हैं जिनकी मेडिकल आवश्यकताएं कुछ अलग किस्म की हैं।

''समकालीन अमेरिकी कला में भारतीय प्रेरणा'' लेख में कैथरीन मायर्स ने अमेरिकी तथा भारतीय संस्कृतियों के मिलन को शब्दों की बुनावट दी है तो कुछ अमेरिकी कलाकारों ने उसमें रंग भर दिए हैं।

दीपेश सतपथी ने ''आईआईटी: अमेरिकी संबंध'' में इन संस्थानों का सर्वेक्षण करते हुए अमेरिकी तथा भारतीय प्रौद्योगिकी अनुसंधानकत्ताओं के लगभग आधी सदी से चल रहे आपसी सहयोग पर प्रकाश डाला है। उनका कार्यक्षेत्र रोबोटों से लेकर बादलों के पैटर्न और नए वायुयानों से लेकर नकली दांतों की निर्माण सामग्री तक फैला हुआ है।

दिनेश शर्मा ''भू-जल प्रदूषण के खिलाफ जंग'' लेख लिखने से पहले कानपुर की झुग्गी-झोपड़ी इलाकों में गए जहां पानी की टोंटियों से पीले-हरे रंग का पानी आता है। अमेरिकी और भारतीय पर्यावरण संस्थाएं वहां के भूमिगत जल और भूमि में से औद्योगिक कचरा दूर करने के लिए नवीनतम वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग कर रही हैं। इस कचरे से मनुष्यों को कैंसर हो सकता है। इस बारे में कई विकल्प हैं तो कई विवाद भी हैं। लोगों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण की किसी समस्या के सर्वोत्तम समाधान को सीधे लागू करना भी संभव नहीं हो पाता। ''दक्षिण-पश्चिम में पांव पसारता खारा पानी'' में जैफ होव कुछ ऐसा ही कह रहे हैं। इसमें पानी पर सीमा के दोनों ओर के किसानों के हक का सवाल तो उठता ही है, यह समस्या भी सामने आ खड़ी होती है कि आखिर दलदल रेगिस्तान के बीचोंबीच क्यों है, और क्या उसे बना रहने दिया जाए?

''टोकविल की निगाह से दिखा अमेरिका'' में क्लेल ब्रायां इस बात का मूल्यांकन कर रहे हैं कि पिछली दो शताब्दियों में अमेरिका के लोग कितने बदले या नहीं बदले।

हमें आशा है इन लेखों के बारे में आप हमें अपनी राय भेजेंगे। 'स्पैन विचार मंच' तथा पाठक सर्वेक्षण के अलावा हमसे आपके संपर्क का एक और नया रास्ता खुल गया है। वह है हमारा ई-मेल पता:

editorspan@state.gov

शुभकामनाओं के साथ,

माइकल एच. एंडरसन